رَسُوۡلًا فَیُوۡحِیَ بِاِذۡنِهٖ مَا یَشَآءُ ؕ اِنَّهٗ عَلِیٌّ حَکِیۡمٌ ﴿۵۱﴾ وَ کَذٰلِکَ اَوۡحَیۡنَاۤ

फ़िरिश्ता भेजे कि वोह उस के हुक्म से वह्य करे जो वोह चाहे[132] बेशक वोह बुलन्दी व हिक्मत वाला है और यूंही हम ने तुम्हें वह्य

اِلَیۡکَ رُوۡحًا مِّنۡ اَمۡرِنَا ؕ مَا کُنۡتَ تَدۡرِیۡ مَا الۡکِتٰبُ وَ لَا الۡاِیۡمَانُ وَ

भेजी[133] एक जांफ़िज़ा चीज़[134] अपने हुक्म से उस से पहले न तुम किताब जानते थे न अह्कामे शरअ़ की तफ़्सील

لٰکِنۡ جَعَلۡنٰهُ نُوۡرًا نَّهۡدِیۡ بِهٖ مَنۡ نَّشَآءُ مِنۡ عِبَادِنَا ؕ وَ اِنَّکَ لَتَهۡدِیۡۤ

हां हम ने उसे[135] नूर किया जिस से हम राह दिखाते हैं अपने बन्दों से जिसे चाहते हैं और बेशक तुम ज़रूर

اِلٰی صِرَاطٍ مُّسۡتَقِیۡمٍ ﴿ۙ۵۲﴾ صِرَاطِ اللّٰهِ الَّذِیۡ لَهٗ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَ مَا فِی

सीधी राह बताते हो[136] **अल्लाह** की राह[137] कि उसी का है जो कुछ आस्मानों में है और जो कुछ

ع ٥ الۡاَرۡضِ ؕ اَلَاۤ اِلَی اللّٰهِ تَصِیۡرُ الۡاُمُوۡرُ ﴿ع۵۳﴾

ज़मीन में सुनते हो सब काम **अल्लाह** ही की तरफ़ फिरते हैं

اٰیاتها ٨٩ ﴿٤٣ سُوۡرَةُ الزُّخۡرُفِ مَکِّیَّةٌ ٦٣﴾ رکوعاتها ٧

सूरए ज़ुख़रुफ़ मक्किय्या है, इस में नवासी आयतें और सात रुकूअ़ हैं

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह्म वाला[1]

مع حٰمٓ ۚ﴿۱﴾ وَ الۡکِتٰبِ الۡمُبِیۡنِ ۙ﴿۲﴾ اِنَّا جَعَلۡنٰهُ قُرۡءٰنًا عَرَبِیًّا لَّعَلَّکُمۡ

रोशन किताब की क़सम[2] हम ने उसे अ़रबी क़ुरआन उतारा कि

تَعۡقِلُوۡنَ ۚ﴿۳﴾ وَ اِنَّهٗ فِیۡۤ اُمِّ الۡکِتٰبِ لَدَیۡنَا لَعَلِیٌّ حَکِیۡمٌ ؕ﴿۴﴾ اَفَنَضۡرِبُ

तुम समझो[3] और बेशक वोह अस्ल किताब में[4] हमारे पास ज़रूर बुलन्दी व हिक्मत वाला है तो क्या हम तुम

के कलाम से मुशर्रफ़ फ़रमाए गए। **शाने नुज़ूल :** यहूद ने हुज़ूरे पुरनूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَسَلَّم से कहा था कि अगर आप नबी हैं तो **अल्लाह** तआ़ला से कलाम करते वक़्त उस को क्यूं नहीं देखते जैसा कि हज़रते मूसा عَلَيۡهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام देखते थे ? हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَسَلَّم ने जवाब दिया कि हज़रते मूसा عَلَيۡهِ السَّلَام नहीं देखते थे और **अल्लाह** तआ़ला ने येह आयत नाज़िल फ़रमाई। **मस्अला : अल्लाह** तआ़ला इस से पाक है कि उस के लिये कोई ऐसा पर्दा हो जैसा जिस्मानिय्यात के लिये होता है, इस पर्दे से मुराद सामेअ़ का दुन्या में दीदार से मह्जूब होना है। **132 :** इस त़रीक़े वह्य में रसूल की त़रफ़ फ़िरिश्ते की वसात़त है। **133 :** ऐ सय्यिदे आ़लम ख़ातमुल मुर्सलीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَسَلَّم ! **134 :** या'नी क़ुरआने पाक जो दिलों में ज़िन्दगी पैदा करता है। **135 :** या'नी क़ुरआन शरीफ़ को **136 :** या'नी दीने इस्लाम। **137 :** जो **अल्लाह** तआ़ला ने अपने बन्दों के लिये मुक़र्रर फ़रमाई। **1 :** सूरए ज़ुख़रुफ़ मक्किय्या है, इस सूरत में सात रुकूअ़, नवासी आयतें और तीन हज़ार चार सो हर्फ़ हैं **2 :** या'नी क़ुरआने पाक की जिस में हिदायत व ज़लालत की राहें जुदा जुदा और वाज़ेह़ कर दीं और उम्मत के तमाम शरई ज़रूरिय्यात को बयान फ़रमा दिया। **3 :** उस के मआ़नी व अह्काम को। **4 :** अस्ल किताब से मुराद लौहे

عَنۡكُمُ الذِّكۡرَ صَفۡحًا اَنۡ كُنۡتُمۡ قَوۡمًا مُّسۡرِفِيۡنَ ﴿۵﴾ وَكَمۡ اَرۡسَلۡنَا مِنۡ

से जिक्र का पहलू फेर दें इस पर कि तुम लोग हद से बढ़ने वाले हो[5] और हम ने कितने ही

نَّبِيٍّ فِى الۡاَوَّلِيۡنَ ﴿۶﴾ وَمَا يَاۡتِيۡهِمۡ مِّنۡ نَّبِيٍّ اِلَّا كَانُوۡا بِهٖ يَسۡتَهۡزِءُوۡنَ ﴿۷﴾

ग़ैब बताने वाले (नबी) अगलों में भेजे और उन के पास जो ग़ैब बताने वाला (नबी) आया उस की हंसी ही बनाया किये[6]

فَاَهۡلَكۡنَاۤ اَشَدَّ مِنۡهُمۡ بَطۡشًا وَّمَضٰى مَثَلُ الۡاَوَّلِيۡنَ ﴿۸﴾ وَلَئِنۡ سَاَلۡتَهُمۡ

तो हम ने वोह हलाक कर दिये जो उन से भी पकड़ में सख़्त थे[7] और अगलों का ह़ाल गुज़र चुका है और अगर तुम उन से पूछो[8]

مَّنۡ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضَ لَيَقُوۡلُنَّ خَلَقَهُنَّ الۡعَزِيۡزُ الۡعَلِيۡمُ ﴿۹﴾

कि आस्मान और ज़मीन किस ने बनाए तो ज़रूर कहेंगे उन्हें बनाया उस इ़ज़्ज़त वाले इ़ल्म वाले ने[9]

الَّذِىۡ جَعَلَ لَكُمُ الۡاَرۡضَ مَهۡدًا وَّجَعَلَ لَكُمۡ فِيۡهَا سُبُلًا لَّعَلَّكُمۡ

जिस ने तुम्हारे लिये ज़मीन को बिछोना किया और तुम्हारे लिये उस में रास्ते किये कि

تَهۡتَدُوۡنَ ﴿۱۰﴾ وَالَّذِىۡ نَزَّلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءًۢ بِقَدَرٍ ۚ فَاَنۡشَرۡنَا بِهٖ

तुम राह पाओ[10] और वोह जिस ने आस्मान से पानी उतारा एक अन्दाज़े से[11] तो हम ने उस से एक

بَلۡدَةً مَّيۡتًا ۚ كَذٰلِكَ تُخۡرَجُوۡنَ ﴿۱۱﴾ وَالَّذِىۡ خَلَقَ الۡاَزۡوَاجَ كُلَّهَا وَ

मुर्दा शहर ज़िन्दा फ़रमा दिया यूंही तुम निकाले जाओगे[12] और जिस ने सब जोड़े बनाए[13] और

جَعَلَ لَكُمۡ مِّنَ الۡفُلۡكِ وَالۡاَنۡعَامِ مَا تَرۡكَبُوۡنَ ﴿۱۲﴾ لِتَسۡتَوٗا عَلٰى ظُهُوۡرِهٖ

तुम्हारे लिये कश्तियों और चौपायों से सुवारियां बनाईं कि तुम उन की पीठों पर ठीक बैठो[14]

मह़फ़ूज़ है, क़ुरआने करीम इस में सब्त है। **5 :** या'नी तुम्हारे कुफ़्र में ह़द से बढ़ने की वज्ह से क्या हम तुम्हें मुहमल छोड़ दें और तुम्हारी त़रफ़ से वह़्ये क़ुरआन का रुख़ फेर दें और तुम्हें अम्र व नही कुछ न करें। मा'ना येह हैं कि हम ऐसा न करेंगे, ह़ज़रते क़तादा ने फ़रमाया कि ख़ुदा की क़सम ! अगर येह क़ुरआने पाक उठा लिया जाता उस वक़्त जब कि इस उम्मत के पहले लोगों ने इस से ए'राज़ किया था तो वोह सब हलाक हो जाते लेकिन उस ने अपनी रह़मत व करम से इस क़ुरआन का नुज़ूल जारी रखा। **6 :** जैसा आप की क़ौम के लोग करते हैं, कुफ़्फ़ार का क़दीम से येह मा'मूल चला आया है। **7 :** और हर त़रह़ का ज़ोर व क़ुव्वत रखते थे, आप की उम्मत के लोग जो पहले कुफ़्फ़ार की चाल चलते हैं उन्हें डरना चाहिये कि कहीं इन का भी वोही अन्जाम न हो जो उन का हुवा कि ज़िल्लतो रुस्वाई की उ़क़ूबतों से हलाक किये गए। **8 :** या'नी मुश्रिकीन से **9 :** या'नी इक़रार करेंगे कि आस्मान व ज़मीन को **अल्लाह** तआ़ला ने बनाया और येह भी इक़रार करेंगे कि वोह इ़ज़्ज़त व इ़ल्म वाला है, बा वुजूद इस इक़रार के बअ़्स का इन्कार कैसी इन्तिहा दरजे की जहालत है। इस के बा'द **अल्लाह** तआ़ला अपने इज़्हारे क़ुदरत के लिये अपनी मस्नूआ़त का ज़िक्र फ़रमाता है और अपने औसाफ़ व शान का इज़्हार करता है। **10 :** सफ़रों में अपने मनाज़िल व मक़ासिद की त़रफ़। **11 :** तुम्हारी ह़ाजतों की क़दर, न इतना कम कि उस से तुम्हारी ह़ाजतें पूरी न हों न इतना ज़ियादा कि क़ौमे नूह़ की त़रह़ तुम्हें हलाक कर दे। **12 :** अपनी क़ब्रों से ज़िन्दा कर के। **13 :** या'नी तमाम अस्नाफ़ व अन्वाअ़। कहा गया है कि **अल्लाह** तआ़ला "फ़र्द" (अकेला) है, ज़िद्द (शरीक होने) और निद्द (मिस्ल होने) और ज़ौजिय्यत (जोड़ा होने) से मुनज़्ज़ा व पाक है, उस के सिवा ख़ल्क़ में जो हे ज़ौज (जोड़ा) है। **14 :** ख़ुश्की और तरी के सफ़र में।

www.dawateislami.net

ثُمَّ تَذْكُرُوْا نِعْمَةَ رَبِّكُمْ اِذَا اسْتَوَیْتُمْ عَلَیْهِ وَ تَقُوْلُوْا سُبْحٰنَ

फिर अपने रब की ने'मत याद करो जब उस पर ठीक बैठ लो और यूं कहो पाकी है

الَّذِیْ سَخَّرَ لَنَا هٰذَا وَ مَا كُنَّا لَهٗ مُقْرِنِیْنَ ﴿١٣﴾ وَ اِنَّاۤ اِلٰى رَبِّنَا

उसे जिस ने इस सुवारी को हमारे बस में कर दिया और येह हमारे बूते (क़ाबू) की न थी और बेशक हमें अपने रब की त़रफ़

لَمُنْقَلِبُوْنَ ﴿١٤﴾ وَ جَعَلُوْا لَهٗ مِنْ عِبَادِهٖ جُزْءًا ؕ اِنَّ الْاِنْسَانَ لَكَفُوْرٌ

पलटना है[15] और उस के लिये उस के बन्दों से टुकड़ा ठहराया[16] बेशक आदमी[17] खुला

١ ع ١٥ ٧

مُّبِیْنٌ ؕ﴿١٥﴾ اَمِ اتَّخَذَ مِمَّا یَخْلُقُ بَنٰتٍ وَّ اَصْفٰىكُمْ بِالْبَنِیْنَ ﴿١٦﴾ وَ اِذَا

नाशुक्रा है[18] क्या उस ने अपने लिये अपनी मख़्लूक़ में से बेटियां लीं और तुम्हें बेटों के साथ ख़ास किया[19] और जब

بُشِّرَ اَحَدُهُمْ بِمَا ضَرَبَ لِلرَّحْمٰنِ مَثَلًا ظَلَّ وَجْهُهٗ مُسْوَدًّا وَّ هُوَ

उन में किसी को ख़ुश ख़बरी दी जाए उस चीज़ की[20] जिस का वस्फ़ रह़मान के लिये बता चुका है[21] तो दिन भर उस का मुंह काला रहे और

كَظِیْمٌ ﴿١٧﴾ اَوَ مَنْ یُّنَشَّؤُا فِی الْحِلْیَةِ وَ هُوَ فِی الْخِصَامِ غَیْرُ مُبِیْنٍ ﴿١٨﴾ وَ

ग़म खाया करे[22] और क्या[23] वोह जो गहने (ज़ेवर) में परवान चढ़े[24] और बह़स में साफ़ बात न करे[25] और

جَعَلُوا الْمَلٰٓىٕكَةَ الَّذِیْنَ هُمْ عِبٰدُ الرَّحْمٰنِ اِنَاثًا ؕ اَشَهِدُوْا خَلْقَهُمْ ؕ

उन्हों ने फ़िरिश्तों को कि रह़मान के बन्दे हैं औ़रतें ठहराया[26] क्या इन के बनाते वक़्त येह ह़ाज़िर थे[27]

15 : आख़िरे कार। मुस्लिम शरीफ़ की ह़दीस में है सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم जब सफ़र में तशरीफ़ ले जाते तो अपनी नाक़ा पर सुवार होते वक़्त पहले "اَلْحَمْدُ لِلّٰه" पढ़ते फिर "سُبْحٰنَ اللّٰه" और "اَللّٰهُ اَكْبَر" येह सब तीन तीन बार, फिर येह आयत पढ़ते "سُبْحٰنَ الَّذِیْ سَخَّرَ لَنَا هٰذَا وَمَا كُنَّا لَهٗ مُقْرِنِیْنَ وَاِنَّاۤ اِلٰى رَبِّنَا لَمُنْقَلِبُوْنَ" और इस के बा'द और दुआ़एं पढ़ते और जब हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم कश्ती में सुवार होते तो फ़रमाते : "بِسْمِ اللّٰهِ مَجْرٖىهَا وَمُرْسٰىهَا اِنَّ رَبِّیْ لَغَفُوْرٌ رَّحِیْمٌ" **16 :** या'नी कुफ़्फ़ार ने इस इक़रार के बा वुजूद कि **अल्लाह** तआ़ला आस्मान व ज़मीन का ख़ालिक़ है येह सितम किया कि मलाएका को **अल्लाह** तआ़ला की बेटियां बताया और औलाद साहि़बे औलाद का जुज़ होती है, ज़ालिमों ने **अल्लाह** तबारक व तआ़ला के लिये जुज़ क़रार दिया, कैसा अ़ज़ीम जुर्म है। **17 :** जो ऐसी बातों का क़ाइल है। **18 :** उस का कुफ़्र ज़ाहिर है। **19 :** अदना अपने लिये और आ'ला तुम्हारे लिये, कैसे जाहिल हो क्या बकते हो। **20 :** या'नी बेटी की कि तेरे घर में बेटी पैदा हुई है **21 :** कि مَعَاذَ اللّٰه वोह बेटी वाला है। **22 :** और बेटी का होना इस क़दर ना गवार समझे बा वुजूद इस के ख़ुदाए पाक के लिये बेटियां बताए (تَعَالَى اللّٰهُ عَنْ ذٰلِكَ) (**अल्लाह** को बरतरी है इस से) **23 :** काफ़िर ह़ज़रते रह़मान के लिये औलाद की क़िस्मों में से तज्वीज़ करते हैं। **24 :** या'नी ज़ेवरों की ज़ैबो ज़ीनत में नाज़ो नज़ाकत के साथ परवरिश पाए। **फ़ाएदा :** इस से मा'लूम हुवा कि ज़ेवर से तज़य्युन (ज़ैबो ज़ीनत करना) दलीले नुक़्सान है तो मर्दों को इस से इज्तिनाब चाहिये, परहेज़ गारी से अपनी ज़ीनत करें। अब आगे आयत में लड़की की एक और कमज़ोरी का इज़्हार फ़रमाया जाता है। **25 :** या'नी अपने ज़ो'फ़े ह़ाल और क़िल्लते अ़क़्ल की वज्ह से। ह़ज़रते क़तादा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने फ़रमाया कि औ़रत जब गुफ़्तगू करती है और अपनी ताईद में कोई दलील पेश करना चाहती है तो अक्सर ऐसा होता है कि वोह अपने ख़िलाफ़ दलील पेश कर देती है। **26 :** ह़ासिल येह है कि फ़िरिश्तों को ख़ुदा की बेटियां बताने में बे दीनों ने तीन कुफ़्र किये **एक** तो **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ औलाद की निस्बत **दूसरे** उस ज़लील चीज़ का उस की त़रफ़ मन्सूब करना जिस को वोह ख़ुद बहुत ही ह़क़ीर समझते हैं और अपने लिये गवारा नहीं करते **तीसरे** मलाएका की तौहीन उन्हें बेटियां बताना। (مدارک) अब इस का रद फ़रमाया जाता है। **27 :** फ़िरिश्तों का मुज़क्कर या मुअन्नस होना ऐसी चीज़ तो है नहीं जिस पर कोई अ़क़्ली दलील क़ाइम हो सके और उन के पास ख़बर

www.dawateislami.net

سَتُكۡتَبُ شَهَادَتُهُمۡ وَيُسۡـَٔلُوۡنَ ﴿١٩﴾ وَقَالُوۡا لَوۡ شَآءَ الرَّحۡمٰنُ مَا عَبَدۡنٰهُمۡ ؕ

अब लिख ली जाएगी उन की गवाही[28] और उन से जवाब त़लब होगा[29] और बोले अगर रह़मान चाहता हम उन्हें न पूजते[30]

مَا لَهُمۡ بِذٰلِكَ مِنۡ عِلۡمٍ ۚ اِنۡ هُمۡ اِلَّا يَخۡرُصُوۡنَ ﴿٢٠﴾ؕ اَمۡ اٰتَيۡنٰهُمۡ كِتٰبًا

उन्हें उस की ह़क़ीक़त कुछ मा'लूम नहीं[31] यूंही अट्कलें दौड़ाते हैं[32] या इस से क़ब्ल हम ने उन्हें

مِّنۡ قَبۡلِهٖ فَهُمۡ بِهٖ مُسۡتَمۡسِكُوۡنَ ﴿٢١﴾ بَلۡ قَالُوۡۤا اِنَّا وَجَدۡنَاۤ اٰبَآءَنَا عَلٰۤى

कोई किताब दी है जिसे वोह थामे हुए हैं[33] बल्कि बोले हम ने अपने बाप दादा को एक दीन

اُمَّةٍ وَّاِنَّا عَلٰۤى اٰثٰرِهِمۡ مُّهۡتَدُوۡنَ ﴿٢٢﴾ وَكَذٰلِكَ مَاۤ اَرۡسَلۡنَا مِنۡ قَبۡلِكَ

पर पाया और हम उन की लकीर पर चल रहे हैं[34] और ऐसे ही हम ने तुम से पहले जब किसी शहर में

فِىۡ قَرۡيَةٍ مِّنۡ نَّذِيۡرٍ اِلَّا قَالَ مُتۡرَفُوۡهَاۤ ۙ اِنَّا وَجَدۡنَاۤ اٰبَآءَنَا عَلٰۤى اُمَّةٍ

कोई डर सुनाने वाला भेजा वहां के आसूदों (मालदारों) ने येही कहा कि हम ने अपने बाप दादा को एक दीन पर पाया

وَّاِنَّا عَلٰۤى اٰثٰرِهِمۡ مُّقۡتَدُوۡنَ ﴿٢٣﴾ قٰلَ اَوَلَوۡ جِئۡتُكُمۡ بِاَهۡدٰى مِمَّا وَجَدۡتُّمۡ

और हम उन की लकीर के पीछे हैं[35] नबी ने फ़रमाया और क्या जब भी कि मैं तुम्हारे पास वोह[36] लाऊं जो सीधी राह हो उस से[37] जिस

عَلَيۡهِ اٰبَآءَكُمۡ ؕ قَالُوۡۤا اِنَّا بِمَاۤ اُرۡسِلۡتُمۡ بِهٖ كٰفِرُوۡنَ ﴿٢٤﴾ فَانۡتَقَمۡنَا مِنۡهُمۡ

पर तुम्हारे बाप दादा थे बोले जो कुछ तुम ले कर भेजे गए हम उसे नहीं मानते[38] तो हम ने उन से बदला लिया[39]

कोई आई नहीं तो जो कुफ़्फ़ार इन को मुअन्नस क़रार देते हैं उन का ज़रीअ़ए इल्म क्या है क्या इन की पैदाइश के वक़्त मौजूद थे ? और उन्हों ने मुशाहदा कर लिया है ? जब येह भी नहीं तो मह़्ज़ जाहिलाना गुमराही की बात है। **28 :** या'नी कुफ़्फ़ार का फ़िरिश्तों के मुअन्नस होने पर गवाही देना लिख लिया जाएगा **29 :** आख़िरत में और इस पर सज़ा दी जाएगी। सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने कुफ़्फ़ार से दरयाफ़्त फ़रमाया कि तुम फ़िरिश्तों को ख़ुदा की बेटियां किस त़रह़ कहते हो तुम्हारा ज़रीअ़ए इल्म क्या है ? उन्हों ने कहा : हम ने अपने बाप दादा से सुना है और हम गवाही देते हैं वोह सच्चे थे। इस गवाही को **अल्लाह** तआ़ला ने फ़रमाया कि लिखी जाएगी और इस पर जवाब त़लब होगा। **30 :** या'नी मलाएका को। मत़्लब येह था कि अगर मलाएका की परस्तिश करने से **अल्लाह** तआ़ला राज़ी न होता तो हम पर अ़ज़ाब नाज़िल करता और जब अ़ज़ाब न आया तो हम समझते हैं कि वोह येही चाहता है। येह उन्हों ने ऐसी बात़िल बात कही जिस से लाज़िम आए कि तमाम जुर्म जो दुन्या में होते हैं उन से ख़ुदा राज़ी है। **अल्लाह** तआ़ला उन की तक्ज़ीब फ़रमाता है। **31 :** वोह रिज़ाए इलाही के जानने वाले ही नहीं। **32 :** झूट बकते हैं। **33 :** और उस में ग़ैरे ख़ुदा की परस्तिश की इजाज़त है ? ऐसा नहीं येह बात़िल है और इस के सिवा भी उन के पास कोई हु़ज्जत नहीं है। **34 :** आंखें मीच कर बे सोचे समझे उन का इत्तिबाअ़ करते हैं, वोह मख़्लूक़ परस्ती किया करते थे। मत़्लब येह है कि इस की कोई दलील बजुज़ इस के नहीं है कि येह काम वोह बाप दादा की पैरवी में करते हैं, **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाता है कि इन से पहले भी ऐसा ही कहा करते थे। **35 :** इस से मा'लूम हुवा कि बाप दादा की अन्धे बन कर पैरवी करना कुफ़्फ़ार का क़दीमी मरज़ है और उन्हें इतनी तमीज़ नहीं कि किसी की पैरवी करने के लिये येह देख लेना ज़रूरी है कि वोह सीधी राह पर हो। चुनान्चे **36 :** दीने ह़क़ **37 :** या'नी उस दीन से **38 :** अगर्चे तुम्हारा दीन ह़क़ व सवाब (दुरुस्त) हो मगर हम अपने बाप दादा का दीन छोड़ने वाले नहीं चाहे वोह कैसा ही हो, इस पर **अल्लाह** तआ़ला इर्शाद फ़रमाता है **39 :** या'नी रसूलों के न मानने वालों और उन्हें झुटलाने वालों से।

www.dawateislami.net

ع ٢ النصف ٨

فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكَذِّبِيْنَ ﴿٢٥﴾ وَ اِذْ قَالَ اِبْرٰهِيْمُ لِاَبِيْهِ وَ

तो देखो झुटलाने वालों का कैसा अन्जाम हुवा और जब इब्राहीम ने अपने बाप और अपनी

قَوْمِهٖۤ اِنَّنِيْ بَرَآءٌ مِّمَّا تَعْبُدُوْنَ ﴿٢٦﴾ اِلَّا الَّذِيْ فَطَرَنِيْ فَاِنَّهٗ

क़ौम से फ़रमाया मैं बेज़ार हूं तुम्हारे मा'बूदों से सिवा उस के जिस ने मुझे पैदा किया कि ज़रूर वोह बहुत जल्द

سَيَهْدِيْنِ ﴿٢٧﴾ وَ جَعَلَهَا كَلِمَةًۢ بَاقِيَةً فِيْ عَقِبِهٖ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ﴿٢٨﴾

मुझे राह देगा और उसे[40] अपनी नस्ल में बाक़ी कलाम रखा[41] कि कहीं वोह बाज़ आएं[42]

بَلْ مَتَّعْتُ هٰۤؤُلَآءِ وَ اٰبَآءَهُمْ حَتّٰى جَآءَهُمُ الْحَقُّ وَ رَسُوْلٌ مُّبِيْنٌ ﴿٢٩﴾ وَ

बल्कि मैं ने उन्हें[43] और उन के बाप दादा को दुन्या के फ़ाएदे दिये[44] यहां तक कि उन के पास हक़[45] और साफ़ बताने वाला रसूल तशरीफ़ लाया[46] और

لَمَّا جَآءَهُمُ الْحَقُّ قَالُوْا هٰذَا سِحْرٌ وَّ اِنَّا بِهٖ كٰفِرُوْنَ ﴿٣٠﴾ وَ قَالُوْا لَوْ لَا

जब उन के पास हक़ आया बोले येह जादू है और हम इस के मुन्किर हैं और बोले क्यूं न

نُزِّلَ هٰذَا الْقُرْاٰنُ عَلٰى رَجُلٍ مِّنَ الْقَرْيَتَيْنِ عَظِيْمٍ ﴿٣١﴾ اَهُمْ يَقْسِمُوْنَ

उतारा गया येह क़ुरआन इन दो शहरों[47] के किसी बड़े आदमी पर[48] क्या तुम्हारे रब की

رَحْمَتَ رَبِّكَ ؕ نَحْنُ قَسَمْنَا بَيْنَهُمْ مَّعِيْشَتَهُمْ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَ

रह़मत वोह बांटते हैं[49] हम ने उन में उन की ज़ीस्त (ज़िन्दगी गुज़ारने) का सामान दुन्या की ज़िन्दगी में बांटा[50] और

40 : या'नी ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام ने अपने इस तौह़ीदी कलिमे को जो फ़रमाया था कि मैं बेज़ार हूं तुम्हारे मा'बूदों से सिवाए उस के जिस ने मुझ को पैदा किया। **41 :** तो आप की औलाद में मुवह़्ह़िद (एक ख़ुदा को मानने वाले) और तौह़ीद के दाई हमेशा रहेंगे। **42 :** शिर्क से और येह दीने बरह़क़ क़बूल करें, यहां ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का ज़िक्र फ़रमाने में तम्बीह है कि ऐ अहले मक्का अगर तुम्हें अपने बाप दादा का इत्तिबाअ़ करना ही है तो तुम्हारे आबा में जो सब से बेहतर हैं ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام उन का इत्तिबाअ़ करो और शिर्क छोड़ दो और येह भी देखो कि उन्हों ने अपने बाप और अपनी क़ौम को राहे रास्त पर नहीं पाया तो उन से बेज़ारी का ए'लान फ़रमा दिया। इस से मा'लूम हुवा कि जो बाप दादा राहे रास्त पर हों दीने ह़क़ रखते हों उन का इत्तिबाअ़ किया जाए और जो बात़िल पर हों गुमराही में हों उन के त़रीक़े से बेज़ारी का ए'लान किया जाए। **43 :** या'नी कुफ़्फ़ारे मक्का को **44 :** दराज़ उ़म्रें अ़त़ा फ़रमाईं और उन के कुफ़्र के बाइस उन पर अ़ज़ाब नाज़िल करने में जल्दी न की। **45 :** या'नी क़ुरआन शरीफ़ **46 :** या'नी सय्यिदे अम्बिया صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم रोशन तरीन आयात व मो'जिज़ात के साथ रौनक़ अफ़्रोज़ हुए और आप ने शरई अह़काम वाज़ेह़ त़ौर पर बयान फ़रमाए और हमारे इस इन्आ़म का ह़क़ येह था कि इस रसूले मुकर्रम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की इत़ाअ़त करते लेकिन उन्हों ने ऐसा न किया। **47 :** मक्कए मुकर्रमा व त़ाइफ़ **48 :** जो कसीरुल माल जथ्थेदार हो जैसे कि मक्कए मुकर्रमा में वलीद बिन मुग़ीरा और त़ाइफ़ में उ़र्वह बिन मस्ऊ़द सक़फ़ी अल्लाह तआ़ला उन की इस बात का रद फ़रमाता है। **49 :** या'नी क्या नुबुव्वत की कुन्जियां उन के हाथ में हैं कि जिस को चाहें दे दें ? किस क़दर जाहिलाना बात कहते हैं। **50 :** तो किसी को ग़नी किया किसी को फ़क़ीर किसी को क़वी किसी को ज़ईफ़, मख़्लूक़ में कोई हमारे ह़ुक्म को बदलने और हमारी तक़्दीर से बाहर निकलने की क़ुदरत नहीं रखता तो जब दुन्या जैसी क़लील चीज़ में किसी को मजाले ए'तिराज़ नहीं तो नुबुव्वत जैसे मन्सबे आ़ली में क्या किसी को दम मारने का मौक़अ़ है ? हम जिसे चाहते हैं ग़नी करते हैं, जिसे चाहते हैं मख़्दूम बनाते हैं, जिसे चाहते हैं फ़क़ीर करते हैं, जिसे चाहते हैं ख़ादिम बनाते हैं, जिसे चाहते हैं नबी बनाते हैं, जिसे चाहते हैं उम्मती बनाते हैं, अमीर क्या कोई अपनी क़ाबिलिय्यत से हो जाता है ? हमारी अ़त़ा है जिसे जो चाहें करें।

رَفَعْنَا بَعْضَهُمْ فَوْقَ بَعْضٍ دَرَجٰتٍ لِّيَتَّخِذَ بَعْضُهُمْ بَعْضًا

उन में एक दूसरे पर दरजों बुलन्दी दी[51] कि उन में एक दूसरे की

سُخْرِيًّا ؕ وَ رَحْمَتُ رَبِّكَ خَيْرٌ مِّمَّا يَجْمَعُوْنَ ﴿۳۲﴾ وَ لَوْ لَاۤ اَنْ يَّكُوْنَ

हंसी बनाए[52] और तुम्हारे रब की रहमत[53] उन की जम्अ़ जथ्था से बेहतर[54] और अगर येह न होता कि

النَّاسُ اُمَّةً وَّاحِدَةً لَّجَعَلْنَا لِمَنْ يَّكْفُرُ بِالرَّحْمٰنِ لِبُيُوْتِهِمْ سُقُفًا مِّنْ

सब लोग एक दीन पर हो जाएं[55] तो हम ज़रूर रह्मान के मुन्किरों के लिये चांदी

فِضَّةٍ وَّ مَعَارِجَ عَلَيْهَا يَظْهَرُوْنَ ﴿۳۳﴾ وَ لِبُيُوْتِهِمْ اَبْوَابًا وَّ سُرُرًا عَلَيْهَا

की छतें और सीढ़ियां बनाते जिन पर चढ़ते और उन के घरों के लिये चांदी के दरवाज़े और चांदी के तख़्त

يَتَّكِـُٔوْنَ ﴿۳۴﴾ وَ زُخْرُفًا ؕ وَ اِنْ كُلُّ ذٰلِكَ لَمَّا مَتَاعُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ؕ وَ

जिन पर तक्या लगाते और त़रह़ त़रह़ की आराइश[56] और येह जो कुछ है जीती दुन्या ही का अस्बाब है और

الْاٰخِرَةُ عِنْدَ رَبِّكَ لِلْمُتَّقِيْنَ ﴿۳۵﴾ ع وَ مَنْ يَّعْشُ عَنْ ذِكْرِ الرَّحْمٰنِ ٣ع ٩

आख़िरत तुम्हारे रब के पास परहेज़ गारों के लिये है[57] और जिसे रतौंद (अन्धा बनना) आए रह्मान के ज़िक्र से[58]

نُقَيِّضْ لَهٗ شَيْطٰنًا فَهُوَ لَهٗ قَرِيْنٌ ﴿۳۶﴾ وَ اِنَّهُمْ لَيَصُدُّوْنَهُمْ عَنِ السَّبِيْلِ

हम उस पर एक शैत़ान तअ़य्युनात करें कि वोह उस का साथी रहे और बेशक वोह शयात़ीन उन को[59] राह से रोकते हैं

51 : कुव्वत व दौलत वग़ैरा दुन्यवी ने'मत में **52 :** या'नी मालदार फ़क़ीर की हंसी करे। येह कुरतुबी की तफ़्सीर के मुत़ाबिक़ है और दूसरे मुफ़स्सिरीन ने ''سُخْرِيًّا'' हंसी बनाने के मा'ना में नहीं लिया है बल्कि आ'माल व इश्ग़ाल के मुसख़्ख़र बनाने के मा'ना में लिया है, इस सूरत में मा'ना येह होंगे कि हम ने दौलत व माल में लोगों को मुतफ़ावत किया ताकि एक दूसरे से माल के ज़रीए ख़िदमत ले और दुन्या का निज़ाम मज़बूत हो, ग़रीब को ज़रीअ़ए मआ़श हाथ आए और मालदार को काम करने वाले बहम पहुंचें तो इस पर कौन ए'तिराज़ कर सकता है कि फुलां को क्यूं ग़नी किया और फुलां को फ़क़ीर और जब दुन्यवी उमूर में कोई शख़्स दम नहीं मार सकता तो नुबुव्वत जैसे रुत्बए आ़ली में किसी को क्या ताबे सुख़न व ह़क़्क़े ए'तिराज़ ? उस की मरज़ी जिस को चाहे सरफ़राज़ फ़रमाए। **53 :** या'नी जन्नत **54 :** या'नी उस माल से बेहतर है जिस को दुन्या में कुफ़्फ़ार जम्अ़ कर के रखते हैं। **55 :** या'नी अगर इस का लिह़ाज़ न होता कि काफ़िरों को फ़राख़िये ऐ़श में देख कर सब लोग काफ़िर हो जाएंगे **56 :** क्यूं कि दुन्या और इस के सामान की हमारे नज़्दीक कुछ क़द्र नहीं वोह सरीउ़ज़्ज़वाल (जल्द ख़त्म होने वाला) है। **57 :** जिन्हें दुन्या की चाहत नहीं। तिरमिज़ी की ह़दीस में है कि अगर **अल्लाह** तआ़ला के नज़्दीक दुन्या मच्छर के पर के बराबर भी क़द्र रखती तो काफ़िर को इस से एक प्यास पानी न देता। (قَالَ التِّرمِذِیُّ حَدِیثٌ حَسَنٌ غَرِیبٌ) दूसरी ह़दीस में है कि सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم नियाज़ मन्दों की एक जमाअ़त के साथ तशरीफ़ ले जाते थे, रास्ते में एक मुर्दा बकरी देखी, फ़रमाया : देखते हो इस के मालिकों ने इसे बहुत बे क़द्री से फेंक दिया, दुन्या की **अल्लाह** तआ़ला के नज़्दीक इतनी भी क़द्र नहीं जितनी बकरी वालों के नज़्दीक इस मरी बकरी की हो। (اَخرَجَهُ التِّرمِذی وَقَالَ حَدِیثٌ حَسَنٌ) **ह़दीस :** सय्यिदे आ़लम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने फ़रमाया कि जब **अल्लाह** तआ़ला अपने किसी बन्दे पर करम फ़रमाता है तो उसे दुन्या से ऐसा बचाता है जैसा कि तुम अपने बीमार को पानी से बचाते हो। (اَلتِّرمِذِیُّ وَ قَالَ حَسَنٌ غَرِیبٌ) **ह़दीस :** दुन्या मोमिन के लिये क़ैदख़ाना और काफ़िर के लिये जन्नत है। **58 :** या'नी कुरआने पाक से अन्धा बन जाए कि इस की हिदायतों को न देखे और उन से फ़ाएदा न उठाए। **59 :** या'नी अन्धा बनने वालों को।

www.dawateislami.net

وَ یَحْسَبُوْنَ اَنَّهُمْ مُّهْتَدُوْنَ ﴿۳۷﴾ حَتّٰۤى اِذَا جَآءَنَا قَالَ یٰلَیْتَ بَیْنِیْ وَ

और[60] समझते येह हैं कि वोह राह पर हैं यहां तक कि जब[61] काफ़िर हमारे पास आएगा अपने शैतान से कहेगा हाए किसी तरह मुझ में

بَیْنَكَ بُعْدَ الْمَشْرِقَیْنِ فَبِئْسَ الْقَرِیْنُ ﴿۳۸﴾ وَ لَنْ یَّنْفَعَكُمُ الْیَوْمَ اِذْ

तुझ में पूरब पश्चिम (मशरिक़ व मग़रिब) का फ़ासिला होता तो क्या ही बुरा साथी है और हरगिज़ तुम्हारा इस[62] से भला न होगा आज जब

ظَّلَمْتُمْ اَنَّكُمْ فِی الْعَذَابِ مُشْتَرِكُوْنَ ﴿۳۹﴾ اَفَاَنْتَ تُسْمِعُ الصُّمَّ اَوْ تَهْدِی

कि[63] तुम ने ज़ुल्म किया कि तुम सब अ़ज़ाब में शरीक हो तो क्या तुम बहरों को सुनाओगे[64] या अन्धों को राह

الْعُمْیَ وَ مَنْ كَانَ فِیْ ضَلٰلٍ مُّبِیْنٍ ﴿۴۰﴾ فَاِمَّا نَذْهَبَنَّ بِكَ فَاِنَّا مِنْهُمْ

दिखाओगे[65] और उन्हें जो खुली गुमराही में हैं[66] तो अगर हम तुम्हें ले जाएं[67] तो उन से हम

مُّنْتَقِمُوْنَ ﴿۴۱﴾ اَوْ نُرِیَنَّكَ الَّذِیْ وَعَدْنٰهُمْ فَاِنَّا عَلَیْهِمْ مُّقْتَدِرُوْنَ ﴿۴۲﴾

ज़रूर बदला लेंगे[68] या तुम्हें दिखा दें[69] जिस का उन्हें हम ने वा'दा दिया है तो हम उन पर बड़ी क़ुदरत वाले हैं

فَاسْتَمْسِكْ بِالَّذِیْۤ اُوْحِیَ اِلَیْكَ ۚ اِنَّكَ عَلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِیْمٍ ﴿۴۳﴾ وَ

तो मज़बूत थामे रहो उसे जो तुम्हारी त़रफ़ वह्य की गई[70] बेशक तुम सीधी राह पर हो और

اِنَّهٗ لَذِكْرٌ لَّكَ وَ لِقَوْمِكَ ۚ وَ سَوْفَ تُسْـَٔلُوْنَ ﴿۴۴﴾ وَ سْـَٔلْ مَنْ اَرْسَلْنَا

बेशक वोह[71] शरफ़ है तुम्हारे लिये[72] और तुम्हारी क़ौम के लिये[73] और अ़न्क़रीब तुम से पूछा जाएगा[74] और उन से पूछो जो हम

ربع مِنْ قَبْلِكَ مِنْ رُّسُلِنَاۤ اَجَعَلْنَا مِنْ دُوْنِ الرَّحْمٰنِ اٰلِهَةً یُّعْبَدُوْنَ ﴿۴۵﴾ ع

ने तुम से पहले रसूल भेजे क्या हम ने रह़मान के सिवा कुछ और ख़ुदा ठहराए जिन को पूजा हो[75]

وَ لَقَدْ اَرْسَلْنَا مُوْسٰى بِاٰیٰتِنَاۤ اِلٰى فِرْعَوْنَ وَ مَلَا۠ىٕهٖ فَقَالَ اِنِّیْ رَسُوْلُ

और बेशक हम ने मूसा को अपनी निशानियों के साथ फ़िरऔ़न और उस के सरदारों की त़रफ़ भेजा तो उस ने फ़रमाया बेशक मैं उस का रसूल

60 : वोह अन्धा बनने वाले बा वुजूद गुमराह होने के 61 : रोज़े क़ियामत 62 : ह़स्रतो नदामत 63 : ज़ाहिर व साबित हो गया कि दुन्या में शिर्क कर के 64 : जो गोशे क़बूल नहीं रखते। 65 : जो चश्मे ह़क़ बीं (ह़क़ देखने वाली आंख) से मह़रूम हैं। 66 : जिन के नसीब में ईमान नहीं। 67 : या'नी उन्हें अ़ज़ाब करने से पहले तुम्हें वफ़ात दें 68 : आप के बा'द। 69 : तुम्हारे ह़यात में उन पर अपना वोह अ़ज़ाब 70 : हमारी किताब क़ुरआने मजीद। 71 : क़ुरआन शरीफ़ 72 : कि अल्लाह तआ़ला ने तुम्हें नुबुव्वत व ह़िक्मत अ़त़ा फ़रमाई। 73 : या'नी उम्मत के लिये कि उन्हें इस से हिदायत फ़रमाई। 74 : रोज़े क़ियामत कि तुम ने क़ुरआन का क्या ह़क़ अदा किया, इस की क्या ता'ज़ीम की, इस ने'मत का क्या शुक्र बजा लाए ? 75 : रसूलों से सुवाल करने के मा'ना येह हैं कि उन के अद्यान व मिलल को तलाश करो ! कहीं भी किसी नबी की उम्मत में बुत परस्ती रवा रखी गई है ? और अक्सर मुफ़स्सिरीन ने इस के मा'ना येह बयान किये हैं कि मोमिनीने अहले किताब से दरयाफ़्त करो कि क्या कभी किसी नबी ने ग़ैरुल्लाह की इबादत की इजाज़त दी ? ताकि मुश्रिकीन पर साबित हो जाए कि मख़्लूक़ परस्ती न किसी रसूल ने बताई न किसी किताब में आई। येह भी एक रिवायत है कि शबे मे'राज सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم ने बैतुल मक़्दिस में

www.dawateislami.net

رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ ﴿۴۶﴾ فَلَمَّا جَآءَهُمْ بِاٰیٰتِنَاۤ اِذَا هُمْ مِّنْهَا یَضْحَكُوْنَ ﴿۴۷﴾ وَ

हूं जो सारे जहां का मालिक है फिर जब वोह उन के पास हमारी निशानियां लाया[76] जभी वोह उन पर हंसने लगे[77] और

مَا نُرِیْهِمْ مِّنْ اٰیَةٍ اِلَّا هِیَ اَكْبَرُ مِنْ اُخْتِهَا٘ وَ اَخَذْنٰهُمْ بِالْعَذَابِ

हम उन्हें जो निशानी दिखाते वोह पहले से बड़ी होती[78] और हम ने उन्हें मुसीबत में गिरिफ़्तार किया

لَعَلَّهُمْ یَرْجِعُوْنَ ﴿۴۸﴾ وَ قَالُوْا یٰۤاَیُّهَ السّٰحِرُ ادْعُ لَنَا رَبَّكَ بِمَا عَهِدَ

कि वोह बाज़ आएं[79] और बोले[80] कि ऐ जादूगर[81] हमारे लिये अपने रब से दुआ कर उस अ़हद के सबब जो उस

عِنْدَكَ ۚ اِنَّنَا لَمُهْتَدُوْنَ ﴿۴۹﴾ فَلَمَّا كَشَفْنَا عَنْهُمُ الْعَذَابَ اِذَا هُمْ

का तेरे पास है[82] बेशक हम हिदायत पर आएंगे[83] फिर जब हम ने उन से वोह मुसीबत टाल दी जभी वोह

یَنْكُثُوْنَ ﴿۵۰﴾ وَ نَادٰى فِرْعَوْنُ فِیْ قَوْمِهٖ قَالَ یٰقَوْمِ اَلَیْسَ لِیْ مُلْكُ

अ़हद तोड़ गए[84] और फ़िरऔ़न अपनी क़ौम में[85] पुकारा कि ऐ मेरी क़ौम क्या मेरे लिये मिस्र की

مِصْرَ وَ هٰذِهِ الْاَنْهٰرُ تَجْرِیْ مِنْ تَحْتِیْ ۚ اَفَلَا تُبْصِرُوْنَ ﴿۵۱﴾ؕ اَمْ اَنَا

सल्त़नत नहीं और येह नहरें कि मेरे नीचे बहती हैं[86] तो क्या तुम देखते नहीं[87] या मैं

خَیْرٌ مِّنْ هٰذَا الَّذِیْ هُوَ مَهِیْنٌ ۙ۬ وَّ لَا یَكَادُ یُبِیْنُ ﴿۵۲﴾ فَلَوْ لَاۤ اُلْقِیَ عَلَیْهِ

बेहतर हूं[88] इस से कि ज़लील है[89] और बात साफ़ करता मा'लूम नहीं होता[90] तो इस पर क्यूं न डाले गए

तमाम अम्बिया की इमामत फ़रमाई, जब हुज़ूर नमाज़ से फ़ारिग़ हुए जिब्रीले अमीन ने अ़र्ज़ किया कि ऐ सरवरे अकरम ! अपने से पहले अम्बिया से दरयाफ़्त फ़रमा लीजिये कि क्या अल्लाह तआला ने अपने सिवा किसी और की इबादत की इजाज़त दी ? हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि इस सुवाल की कुछ ह़ाजत नहीं या'नी इस में कोई शक ही नहीं कि तमाम अम्बिया तौह़ीद की दा'वत देते आए सब ने मख़्लूक़ परस्ती की मुमानअ़त फ़रमाई । **76 :** जो ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام की रिसालत पर दलालत करती थीं । **77 :** और उन को जादू बताने लगे । **78 :** या'नी हर एक निशानी अपनी ख़ुसूसिय्यत में दूसरी से बढ़ी चढ़ी थी, मुराद येह है कि एक से एक आ'ला थी । **79 :** कुफ़्र से ईमान की त़रफ़ और येह अ़ज़ाब क़ह़त साली और तूफ़ान व टिड्डी वग़ैरा से किये गए, येह सब ह़ज़रते मूसा عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की निशानियां थीं जो इन की नुबुव्वत पर दलालत करती थीं और उन में एक से एक बुलन्दो बाला थी । **80 :** अ़ज़ाब देख कर ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام से **81 :** येह कलिमे उन के उ़र्फ़ और मुहावरे में बहुत ता'ज़ीमो तकरीम का था वोह आ़लिम व माहिर व ह़ाज़िक़ कामिल को जादूगर कहा करते थे और इस का सबब येह था कि उन की नज़र में जादू की बहुत अ़ज़मत थी और वोह इस को सिफ़ते मद्ह़ समझते थे, इस लिये उन्हों ने ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام को ब वक़्ते इल्तिजा इस कलिमे से निदा की, कहा : **82 :** वोह अ़हद या तो येह है कि आप की दुआ़ मुस्तजाब है या नुबुव्वत या ईमान लाने वालों और हिदायत क़बूल करने वालों पर से अ़ज़ाब उठा लेना । **83 :** ईमान लाएंगे । चुनान्चे ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने दुआ़ की और उन पर से अ़ज़ाब उठा लिया गया । **84 :** ईमान न लाए कुफ़्र पर मुसिर रहे । **85 :** बहुत इफ़्तिख़ार के साथ **86 :** येह दरियाए नील से निकली हुई बड़ी बड़ी नहरें थीं जो फ़िरऔ़न के क़स्र (मह़ल) के नीचे जारी थीं । **87 :** मेरी अ़ज़मतो क़ुव्वत और शानो सत्वत (शौकत) । अल्लाह तआला की अ़जीब शान है ! ख़लीफ़ा रशीद ने जब येह आयत पढ़ी और हुकूमते मिस्र पर फ़िरऔ़न का ग़ुरूर देखा तो कहा कि मैं वोह मिस्र अपने अदना ग़ुलाम को दे दूंगा । चुनान्चे उन्हों ने ''मिस्र'' ख़ुसैब को दे दिया जो उन का ग़ुलाम था और वुज़ू कराने की ख़िदमत पर मामूर था । **88 :** या'नी क्या तुम्हारे नज़्दीक साबित हो गया और तुम ने समझ लिया कि मैं बेहतर हूं **89 :** येह उस बे ईमान मुतकब्बिर ने ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام की शान में कहा । **90 :** ज़बान में गिरह होने की वज्ह से जो बचपन में आग मुंह में रखने से पड़ गई थी और येह

اَسْوِرَةٌ مِّنْ ذَهَبٍ اَوْ جَآءَ مَعَهُ الْمَلٰٓئِكَةُ مُقْتَرِنِيْنَ ﴿٥٣﴾ فَاسْتَخَفَّ

सोने के कंगन[91] या इस के साथ फ़िरिश्ते आते कि इस के पास रहते[92] फिर उस ने अपनी क़ौम को

قَوْمَهٗ فَاَطَاعُوْهُ ؕ اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمًا فٰسِقِيْنَ ﴿٥٤﴾ فَلَمَّاۤ اٰسَفُوْنَا انْتَقَمْنَا

कम अ़क़्ल कर लिया[93] तो वोह उस के कहने पर चले[94] बेशक वोह बे हुक्म लोग थे फिर जब उन्हों ने वोह किया जिस पर हमारा ग़ज़ब

ع٥ مِنْهُمْ فَاَغْرَقْنٰهُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿٥٥﴾ ۙ فَجَعَلْنٰهُمْ سَلَفًا وَّ مَثَلًا لِّلْاٰخِرِيْنَ ﴿٥٦﴾ ع

उन पर आया हम ने उन से बदला लिया तो हम ने उन सब को डुबो दिया उन्हें हम ने कर दिया अगली दास्तान और कहावत पिछलों के लिये[95]

وَلَمَّا ضُرِبَ ابْنُ مَرْيَمَ مَثَلًا اِذَا قَوْمُكَ مِنْهُ يَصِدُّوْنَ ﴿٥٧﴾ وَقَالُوْۤا

और जब इब्ने मरयम की मिसाल बयान की जाए जभी तुम्हारी क़ौम उस से हंसने लगते हैं[96] और कहते हैं

ءَاٰلِهَتُنَا خَيْرٌ اَمْ هُوَ ؕ مَا ضَرَبُوْهُ لَكَ اِلَّا جَدَلًا ؕ بَلْ هُمْ قَوْمٌ

क्या हमारे मा'बूद बेहतर हैं या वोह[97] उन्हों ने तुम से येह न कही मगर नाहक़ झगड़े को[98] बल्कि वोह हैं ही

خَصِمُوْنَ ﴿٥٨﴾ اِنْ هُوَ اِلَّا عَبْدٌ اَنْعَمْنَا عَلَيْهِ وَجَعَلْنٰهُ مَثَلًا لِّبَنِیْۤ

झगड़ालू लोग[99] वोह तो नहीं मगर एक बन्दा जिस पर हम ने एहसान फ़रमाया[100] और उसे हम ने बनी इसराईल के लिये

उस मल्ऊ़न ने झूट कहा क्यूं कि आप की दुआ़ से **अल्लाह** तआ़ला ने ज़बाने अक़्दस की वोह गिरह ज़ाइल कर दी थी लेकिन फ़िरऔ़नी पहले ही ख़याल में थे, आगे फिर इसी फ़िरऔ़न का कलाम ज़िक्र फ़रमाया जाता है। **91 :** या'नी अगर ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام सच्चे हैं और **अल्लाह** तआ़ला ने इन को वाजिबुल इत़ाअ़त सरदार बनाया है तो इन्हें सोने का कंगन क्यूं नहीं पहनाया। येह बात उस ने अपने ज़माने के दस्तूर के मुताबिक़ कही कि उस ज़माने में जिस किसी को सरदार बनाया जाता था उस को सोने के कंगन और सोने का त़ौक़ पहनाया जाता था। **92 :** और इस के सिद्क़ की गवाही देते। **93 :** उन जाहिलों की अ़क़्ल ख़ब्त़ (ख़राब) कर दी उन्हें बहला फुसला लिया **94 :** और ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام की तक्ज़ीब करने लगे **95 :** कि बा'द वाले उन के ह़ाल से नसीह़त व इ़ब्रत ह़ासिल करें। **96 शाने नुज़ूल :** जब सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने कुरैश के सामने येह आयत "وَمَا تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ حَصَبُ جَهَنَّمَ" पढ़ी जिस के मा'ना येह हैं कि ऐ मुश्रिकीन ! तुम और जो चीज़ **अल्लाह** के सिवा तुम पूजते हो सब जहन्नम का ईंधन है। येह सुन कर मुश्रिकीन को बहुत ग़ुस्सा आया और इब्ने ज़िबा'रा कहने लगा : या मुह़म्मद ! (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) क्या येह ख़ास़ हमारे और हमारे मा'बूदों ही के लिये है या हर उम्मत व गुरोह के लिये ? सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि येह तुम्हारे और तुम्हारे मा'बूदों के लिये भी है और सब उम्मतों के लिये भी। इस पर उस ने कहा कि आप के नज़्दीक ई़सा बिन मरयम नबी हैं और आप उन की और उन की वालिदा की ता'रीफ़ करते हैं और आप को मा'लूम है कि नसारा इन दोनों को पूजते हैं और ह़ज़रते उ़ज़ैर और फ़िरिश्ते भी पूजे जाते हैं या'नी यहूद वग़ैरा उन को पूजते हैं तो अगर येह ह़ज़रात (مَعَاذَ اللّٰه) जहन्नम में हों तो हम राज़ी हैं कि हम और हमारे मा'बूद भी उन के साथ हों और येह कह कर कुफ़्फ़ार ख़ूब हंसे, इस पर येह आयत **अल्लाह** तआ़ला ने नाज़िल फ़रमाई : "اِنَّ الَّذِيْنَ سَبَقَتْ لَهُمْ مِّنَّا الْحُسْنٰى ۙ اُولٰٓئِكَ عَنْهَا مُبْعَدُوْنَ" और येह आयत नाज़िल हुई : "وَلَمَّا ضُرِبَ ابْنُ مَرْيَمَ......الآية" जिस का मत़लब येह है कि जब इब्ने ज़िबा'रा ने अपने मा'बूदों के लिये ह़ज़रते ई़सा बिन मरयम की मिसाल बयान की और सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم से मुजादला किया कि नसारा उन्हें पूजते हैं तो कुरैश उस की इस बात पर हंसने लगे। **97 :** या'नी ह़ज़रते ई़सा عَلَيْهِ السَّلَام। मत़लब येह था कि आप के नज़्दीक ह़ज़रते ई़सा عَلَيْهِ السَّلَام बेहतर हैं तो अगर (مَعَاذَ اللّٰه) वोह जहन्नम में हुए तो हमारे मा'बूद या'नी बुत भी हुवा करें कुछ परवाह नहीं, इस पर **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाता है : **98 :** येह जानते हुए कि वोह जो कुछ कह रहे हैं बात़िल है और आयए करीमा "اِنَّكُمْ وَمَا تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ" (बेशक तुम और जो कुछ **अल्लाह** के सिवा तुम पूजते हो) से सिर्फ़ बुत मुराद हैं, ह़ज़रते ई़सा व ह़ज़रते उ़ज़ैर

اِسۡرَآءِيۡلَ ﴿۵۹﴾ وَلَوۡ نَشَآءُ لَجَعَلۡنَا مِنۡكُمۡ مَّلٰٓئِكَةً فِى الۡاَرۡضِ

अ़जीब नमूना बनाया[101] और अगर हम चाहते तो[102] ज़मीन में तुम्हारे बदले फ़िरिश्ते

يَخۡلُفُوۡنَ ﴿۶۰﴾ وَاِنَّهٗ لَعِلۡمٌ لِّلسَّاعَةِ فَلَا تَمۡتَرُنَّ بِهَا وَاتَّبِعُوۡنِ ؕ هٰذَا

बसाते[103] और बेशक ईसा क़ियामत की ख़बर है[104] तो हरगिज़ क़ियामत में शक न करना और मेरे पैरव होना[105] येह

صِرَاطٌ مُّسۡتَقِيۡمٌ ﴿۶۱﴾ وَلَا يَصُدَّنَّكُمُ الشَّيۡطٰنُ ۚ اِنَّهٗ لَكُمۡ عَدُوٌّ مُّبِيۡنٌ ﴿۶۲﴾

सीधी राह है और हरगिज़ शैतान तुम्हें न रोक दे[106] बेशक वोह तुम्हारा खुला दुश्मन है

وَلَمَّا جَآءَ عِيۡسٰى بِالۡبَيِّنٰتِ قَالَ قَدۡ جِئۡتُكُمۡ بِالۡحِكۡمَةِ وَلِاُبَيِّنَ لَكُمۡ

और जब ईसा रोशन निशानियां[107] लाया उस ने फ़रमाया मैं तुम्हारे पास हिक्मत ले कर आया[108] और इस लिये मैं तुम से बयान कर दूं

بَعۡضَ الَّذِىۡ تَخۡتَلِفُوۡنَ فِيۡهِ ۚ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَطِيۡعُوۡنِ ﴿۶۳﴾ اِنَّ اللّٰهَ

बा'ज़ वोह बातें जिन में तुम इख़्तिलाफ़ रखते हो[109] तो **अल्लाह** से डरो और मेरा हुक्म मानो बेशक **अल्लाह**

هُوَ رَبِّىۡ وَرَبُّكُمۡ فَاعۡبُدُوۡهُ ؕ هٰذَا صِرَاطٌ مُّسۡتَقِيۡمٌ ﴿۶۴﴾ فَاخۡتَلَفَ

मेरा रब और तुम्हारा रब तो उसे पूजो येह सीधी राह है[110] फिर वोह

الۡاَحۡزَابُ مِنۡۢ بَيۡنِهِمۡ ۚ فَوَيۡلٌ لِّلَّذِيۡنَ ظَلَمُوۡا مِنۡ عَذَابِ يَوۡمٍ اَلِيۡمٍ ﴿۶۵﴾

गुरौह आपस में मुख़्तलिफ़ हो गए[111] तो ज़ालिमों की ख़राबी है[112] एक दर्दनाक दिन के अ़ज़ाब से[113]

هَلۡ يَنۡظُرُوۡنَ اِلَّا السَّاعَةَ اَنۡ تَاۡتِيَهُمۡ بَغۡتَةً وَّهُمۡ لَا يَشۡعُرُوۡنَ ﴿۶۶﴾

काहे के इन्तिज़ार में हैं मगर क़ियामत के कि उन पर अचानक आ जाए और उन्हें ख़बर न हो

और मलाएका कोई मुराद नहीं लिये जा सकते। इब्ने ज़िबा'रा अ़रब था अ़रबी ज़बान का जानने वाला था, येह उस को ख़ूब मा'लूम था कि "مَاتَعۡبُدُوۡنَ" में जो "مَا" है इस के मा'ना चीज़ के हैं, इस से ग़ैर ज़वील उ़क़ूल मुराद होते हैं लेकिन बा वुजूद इस के उस का ज़बाने अ़रब के उसूल से जाहिल बन कर हज़रते ईसा और हज़रते उ़ज़ैर और मलाएका को इस में दाख़िल करना कठ हुज्जती और जहल परवरी है। **99 :** बातिल के दरपै होने वाले। अब हज़रते ईसा عَلَيۡهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की निस्बत इर्शाद फ़रमाया जाता है : **100 :** नुबुव्वत अ़ता फ़रमा कर। **101 :** अपनी क़ुदरत का कि बिग़ैर बाप के पैदा किया। **102 :** ऐ अहले मक्का ! हम तुम्हें हलाक कर देते और **103 :** जो हमारी इबादत व इताअ़त करते। **104 :** या'नी हज़रते ईसा عَلَيۡهِ السَّلَام का आस्मान से उतरना अ़लामाते क़ियामत में से है। **105 :** या'नी मेरी हिदायत व शरीअ़त का इत्तिबाअ़ करना। **106 :** शरीअ़त के इत्तिबाअ़ या क़ियामत के यक़ीन या दीने इलाही पर क़ाइम रहने से। **107 :** या'नी मो'जिज़ात **108 :** या'नी नुबुव्वत और इन्जीली अह़काम। **109 :** तौरैत के अह़काम में से। **110 :** हज़रते ईसा عَلَيۡهِ السَّلَام का कलामे मुबारक तमाम हो चुका, आगे नसरानियों के शिर्कों का बयान फ़रमाया जाता है **111 :** हज़रते ईसा عَلَيۡهِ السَّلَام के बा'द उन में से किसी ने कहा कि ईसा ख़ुदा थे। किसी ने कहा : ख़ुदा के बेटे। किसी ने कहा : तीन में के तीसरे। ग़रज़ नसरानी फ़िर्क़े फ़िर्क़े हो गए : या'क़ूबी, नुस्तूरी, मल्कानी, शम्ऊ़नी। **112 :** जिन्हों ने हज़रते ईसा عَلَيۡهِ السَّلَام के बारे में कुफ़्र की बातें कहीं। **113 :** या'नी रोज़े क़ियामत के।

اَلۡاَخِلَّآءُ یَوۡمَئِذٍۭ بَعۡضُهُمۡ لِبَعۡضٍ عَدُوٌّ اِلَّا الۡمُتَّقِیۡنَ ﴿٦٧﴾ یٰعِبَادِ لَا
गहरे दोस्त उस दिन एक दूसरे के दुश्मन होंगे मगर परहेज़ गार[114] उन से फ़रमाया जाएगा

خَوۡفٌ عَلَیۡکُمُ الۡیَوۡمَ وَلَاۤ اَنۡتُمۡ تَحۡزَنُوۡنَ ﴿٦٨﴾ اَلَّذِیۡنَ اٰمَنُوۡا بِاٰیٰتِنَا وَ
ऐ मेरे बन्दो आज न तुम पर ख़ौफ़ न तुम को ग़म हो वोह जो हमारी आयतों पर ईमान लाए और

کَانُوۡا مُسۡلِمِیۡنَ ﴿٦٩﴾ اُدۡخُلُوا الۡجَنَّةَ اَنۡتُمۡ وَاَزۡوَاجُکُمۡ تُحۡبَرُوۡنَ ﴿٧٠﴾
मुसल्मान थे दाख़िल हो जन्नत में तुम और तुम्हारी बीबियां तुम्हारी ख़ातिरें होतीं[115]

یُطَافُ عَلَیۡهِمۡ بِصِحَافٍ مِّنۡ ذَهَبٍ وَّاَکۡوَابٍ ۚ وَفِیۡهَا مَا تَشۡتَهِیۡهِ
उन पर दौरा होगा सोने के पियालों और जामों का और उस में जो

الۡاَنۡفُسُ وَتَلَذُّ الۡاَعۡیُنُ ۚ وَاَنۡتُمۡ فِیۡهَا خٰلِدُوۡنَ ﴿٧١﴾ وَتِلۡكَ الۡجَنَّةُ
जी चाहे और जिस से आंख को लज़्ज़त पहुंचे[116] और तुम उस में हमेशा रहोगे और येह है वोह जन्नत

الَّتِیۡۤ اُوۡرِثۡتُمُوۡهَا بِمَا کُنۡتُمۡ تَعۡمَلُوۡنَ ﴿٧٢﴾ لَکُمۡ فِیۡهَا فَاکِهَةٌ کَثِیۡرَةٌ
जिस के तुम वारिस किये गए अपने आ'माल से तुम्हारे लिये इस में बहुत मेवे हैं

مِّنۡهَا تَاۡکُلُوۡنَ ﴿٧٣﴾ اِنَّ الۡمُجۡرِمِیۡنَ فِیۡ عَذَابِ جَهَنَّمَ خٰلِدُوۡنَ ﴿٧٤﴾
कि उन में से खाओ[117] बेशक मुजरिम[118] जहन्नम के अ़ज़ाब में हमेशा रहने वाले हैं

لَا یُفَتَّرُ عَنۡهُمۡ وَهُمۡ فِیۡهِ مُبۡلِسُوۡنَ ﴿٧٥﴾ وَمَا ظَلَمۡنٰهُمۡ وَلٰکِنۡ کَانُوۡا هُمُ
वोह कभी उन पर से हलका न पड़ेगा और वोह उस में बे आस रहेंगे[119] और हम ने उन पर कुछ ज़ुल्म न किया हां वोह ख़ुद ही

114 : या'नी दीनी दोस्ती और वोह महब्बत जो अल्लाह तआ़ला के लिये है बाक़ी रहेगी। ह़ज़रत अ़लिय्ये मुर्तज़ा رضی اللہ تعالٰی عنہ से इस आयत की तफ़्सीर में मरवी है आप ने फ़रमाया : दो दोस्त मोमिन और दो दोस्त काफ़िर, मोमिन दोस्तों में एक मर जाता है तो बारगाहे इलाही में अ़र्ज़ करता है : या रब ! फ़ुलां मुझे तेरी और तेरे रसूल की फ़रमां बरदारी का और नेकी करने का हुक्म करता था और मुझे बुराई से रोकता था और ख़बर देता था कि मुझे तेरे हुज़ूर ह़ाज़िर होना है, या रब ! उस को मेरे बा'द गुमराह न कर और उस को हिदायत दे जैसी मेरी हिदायत फ़रमाई और उस का इक्राम कर जैसा मेरा इक्राम फ़रमाया। जब उस का मोमिन दोस्त मर जाता है तो अल्लाह तआ़ला दोनों को जम्अ़ करता है और फ़रमाता है कि तुम में हर एक दूसरे की ता'रीफ़ करे तो हर एक कहता है कि येह अच्छा भाई है, अच्छा दोस्त है, अच्छा रफ़ीक़ है और दो काफ़िर दोस्तों में से जब एक मर जाता है तो दुआ़ करता है : या रब ! फ़ुलां मुझे तेरी और तेरे रसूल की फ़रमां बरदारी से मन्अ़ करता था और बदी का हुक्म देता था, नेकी से रोकता था और ख़बर देता था कि मुझे तेरे हुज़ूर ह़ाज़िर होना नहीं, तो अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि तुम में से हर एक दूसरे की ता'रीफ़ करे, तो उन में से एक दूसरे को कहता है : बुरा भाई, बुरा दोस्त, बुरा रफ़ीक़। 115 : या'नी जन्नत में तुम्हारा इक्राम होगा ने'मतें दी जाएंगी ऐसे ख़ुश किये जाओगे कि तुम्हारे चेहरों पर ख़ुशी के आसार नुमूदार होंगे। 116 : अन्वाओ़ अक़्साम की ने'मतें। 117 : जन्नती दरख़्त समर दार सदा बहार हैं उन की ज़ैबो ज़ीनत में फ़र्क़ नहीं आता। ह़दीस शरीफ़ में है कि अगर कोई उन से एक फल लेगा तो दरख़्त में उस की जगह दो फल नुमूदार हो जाएंगे। 118 : या'नी काफ़िर 119 : रह़मत की उम्मीद भी न होगी।

الظّٰلِمِيْنَ ﴿٧٦﴾ وَ نَادَوْا يٰمٰلِكُ لِيَقْضِ عَلَيْنَا رَبُّكَ ؕ قَالَ اِنَّكُمْ

ज़ालिम थे[120] और वोह पुकारेंगे[121] ऐ मालिक तेरा रब हमें तमाम कर चुके[122] वोह फ़रमाएगा[123] तुम्हें

مّٰكِثُوْنَ ﴿٧٧﴾ لَقَدْ جِئْنٰكُمْ بِالْحَقِّ وَ لٰكِنَّ اَكْثَرَكُمْ لِلْحَقِّ كٰرِهُوْنَ ﴿٧٨﴾

तो ठहरना है[124] बेशक हम तुम्हारे पास ह़क़ लाए[125] मगर तुम में अक्सर को ह़क़ ना गवार है

اَمْ اَبْرَمُوْۤا اَمْرًا فَاِنَّا مُبْرِمُوْنَ ﴿٧٩﴾ۚ اَمْ يَحْسَبُوْنَ اَنَّا لَا نَسْمَعُ

क्या उन्हों ने[126] अपने ख़याल में कोई काम पक्का कर लिया है[127] तो हम अपना काम पक्का करने वाले हैं[128] क्या इस घमन्ड में हैं कि हम उन की आहिस्ता बात

سِرَّهُمْ وَ نَجْوٰىهُمْ ؕ بَلٰى وَ رُسُلُنَا لَدَيْهِمْ يَكْتُبُوْنَ ﴿٨٠﴾ قُلْ اِنْ كَانَ

और उन की मश्वरत नहीं सुनते हां क्यूं नहीं[129] और हमारे फ़िरिश्ते उन के पास लिख रहे हैं तुम फ़रमाओ ब फ़र्ज़े मुह़ाल

لِلرَّحْمٰنِ وَلَدٌ ۖۗ فَاَنَا اَوَّلُ الْعٰبِدِيْنَ ﴿٨١﴾ سُبْحٰنَ رَبِّ السَّمٰوٰتِ وَ

रह़मान के कोई बच्चा होता तो सब से पहले मैं पूजता[130] पाकी है आस्मानों और ज़मीन

الْاَرْضِ رَبِّ الْعَرْشِ عَمَّا يَصِفُوْنَ ﴿٨٢﴾ فَذَرْهُمْ يَخُوْضُوْا وَ يَلْعَبُوْا

के रब को अ़र्श के रब को उन बातों से जो येह बनाते हैं[131] तो तुम उन्हें छोड़ो कि बेहूदा बातें करें और खेलें[132]

حَتّٰى يُلٰقُوْا يَوْمَهُمُ الَّذِيْ يُوْعَدُوْنَ ﴿٨٣﴾ وَ هُوَ الَّذِيْ فِي السَّمَآءِ اِلٰهٌ وَّ

यहां तक कि अपने उस दिन को पाएं जिस का उन से वा'दा है[133] और वोही आस्मान वालों का ख़ुदा और

فِي الْاَرْضِ اِلٰهٌ ؕ وَ هُوَ الْحَكِيْمُ الْعَلِيْمُ ﴿٨٤﴾ وَ تَبٰرَكَ الَّذِيْ لَهٗ مُلْكُ

ज़मीन वालों का ख़ुदा[134] और वोही ह़िक्मत व इल्म वाला है और बड़ी बरकत वाला है वोह कि उसी के लिये है सल्त़नत

120 : कि सरकशी व ना फ़रमानी कर के इस ह़ाल को पहुंचे। **121 :** जहन्नम के दारोग़ा को कि **122 :** या'नी मौत दे दे। मालिक से दरख़्वास्त करेंगे कि वोह **अल्लाह** तबारक व तआ़ला से उन की मौत की दुआ़ करे। **123 :** हज़ार बरस बा'द। **124 :** अ़ज़ाब में हमेशा, कभी इस से रिहाई न पाओगे न मौत से न और किसी त़रह़, इस के बा'द **अल्लाह** तआ़ला अहले मक्का से ख़ित़ाब फ़रमाता है **125 :** अपने रसूलों की मा'रिफ़त। **126 :** या'नी कुफ़्फ़ारे मक्का ने **127 :** नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के साथ मक्र करने और फ़रेब से ईज़ा पहुंचाने का और दर ह़क़ीक़त ऐसा ही था कि क़ुरैश दारुन्नद्वा में जम्अ़ हो कर ह़ुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की ईज़ा रसानी के लिये ह़ीले सोचते थे। **128 :** उन के इस मक्रो फ़रेब का बदला जिस का अन्जाम उन की हलाकत है। **129 :** हम ज़रूर सुनते हैं और पोशीदा ज़ाहिर हर बात जानते हैं, हम से कुछ नहीं छुप सकता। **130 :** लेकिन उस के बच्चा नहीं और उस के लिये औलाद मुह़ाल है, येह नफ़िये वलद में मुबालग़ा है। **शाने नुज़ूल :** नज़्र बिन ह़ारिस ने कहा था कि फ़िरिश्ते ख़ुदा की बेटियां हैं, इस पर येह आयत नाज़िल हुई तो नज़्र कहने लगा : देखते हो क़ुरआन में मेरी तस्दीक़ आ गई। वलीद ने कहा कि तेरी तस्दीक़ नहीं हुई बल्कि येह फ़रमाया गया कि रह़मान के वलद नहीं है और मैं अहले मक्का में से पहला मुवह़्ह़िद हूं उस से वलद की नफ़ी करने वाला। इस के बा'द **अल्लाह** तबारक व तआ़ला की तन्ज़ीह (पाकी) का बयान है। **131 :** और उस के लिये औलाद क़रार देते हैं। **132 :** या'नी जिस लग़्व व बात़िल में हैं उसी में पड़े रहें। **133 :** जिस में अ़ज़ाब किये जाएंगे और वोह रोज़े क़ियामत है। **134 :** या'नी वोही मा'बूद है, आस्मान व ज़मीन में उसी की इ़बादत की जाती है, उस के सिवा कोई मा'बूद नहीं।

السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ۚ وَعِنْدَهٗ عِلْمُ السَّاعَةِ ۚ وَاِلَيْهِ

आस्मानों और ज़मीन की और जो कुछ इन के दरमियान है और उसी के पास है क़ियामत का इल्म और तुम्हें

تُرْجَعُوْنَ ﴿۸۵﴾ وَلَا يَمْلِكُ الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهِ الشَّفَاعَةَ اِلَّا

उसी की त़रफ़ फिरना और जिन को येह **अल्लाह** के सिवा पूजते हैं शफ़ाअ़त का इख़्तियार नहीं रखते हां शफ़ाअ़त का इख़्तियार उन्हें है

مَنْ شَهِدَ بِالْحَقِّ وَهُمْ يَعْلَمُوْنَ ﴿۸۶﴾ وَلَئِنْ سَاَلْتَهُمْ مَّنْ خَلَقَهُمْ لَيَقُوْلُنَّ

जो ह़क़ की गवाही दें[135] और इल्म रखें[136] और अगर तुम उन से पूछो[137] कि उन्हें किस ने पैदा किया तो ज़रूर कहेंगे

وقف لازم اللّٰهُ فَاَنّٰى يُؤْفَكُوْنَ ﴿۸۷﴾ وَقِيْلِهٖ يٰرَبِّ اِنَّ هٰۤؤُلَآءِ قَوْمٌ لَّا يُؤْمِنُوْنَ ﴿۸۸﴾

अल्लाह ने[138] तो कहां औंधे जाते हैं[139] मुझे रसूल[140] के इस कहने की क़सम[141] कि ऐ मेरे रब येह लोग ईमान नहीं लाते

ع ٧ ٢٢ ١٣ فَاصْفَحْ عَنْهُمْ وَقُلْ سَلٰمٌ ؕ فَسَوْفَ يَعْلَمُوْنَ ﴿۸۹﴾

तो उन से दर गुज़र करो[142] और फ़रमाओ बस सलाम है[143] कि आगे जान जाएंगे[144]

رُكُوْعَاتُهَا ۳	۴۴ سُوْرَةُ الدُّخَانِ مَكِّيَّةٌ ۶۴	اٰيَاتُهَا ۵۹

सूरए दुख़ान मक्किय्या है, इस में उन्सठ आयतें और तीन रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह़्म वाला[1]

مع ١٢ حٰمٓ ﴿۱﴾ وَالْكِتٰبِ الْمُبِيْنِ ﴿۲﴾ اِنَّاۤ اَنْزَلْنٰهُ فِيْ لَيْلَةٍ مُّبٰرَكَةٍ اِنَّا كُنَّا

क़सम उस रोशन किताब की[2] बेशक हम ने उसे बरकत वाली रात में उतारा[3] बेशक हम

مُنْذِرِيْنَ ﴿۳﴾ فِيْهَا يُفْرَقُ كُلُّ اَمْرٍ حَكِيْمٍ ﴿۴﴾ اَمْرًا مِّنْ عِنْدِنَا ؕ اِنَّا

डर सुनाने वाले हैं[4] उस में बांट दिया जाता है हर ह़िक्मत वाला काम[5] हमारे पास के हुक्म से बेशक

135 : या'नी तौह़ीदे इलाही की। **136 :** इस का कि **अल्लाह** उन का रब है, ऐसे मक़्बूल बन्दे ईमानदारों की शफ़ाअ़त करेंगे। **137 :** या'नी मुशरिकीन से। **138 :** और **अल्लाह** तआ़ला के ख़ालिक़े आ़लम होने का इक़्रार करेंगे। **139 :** और बा वुजूद इस इक़्रार के उस की तौह़ीद व इ़बादत से फिरते हैं। **140 :** सय्यिदे आ़लम मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم **141 :** **अल्लाह** तबारक व तआ़ला का हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के क़ौले मुबारक की क़सम फ़रमाना हुज़ूर के इक्राम और हुज़ूर की दुआ़ व इल्तिजा के एह़तिराम का इज़्हार है। **142 :** और उन्हें छोड़ दो **143 :** येह सलामे मुतारकत है, इस के मा'ना येह हैं कि हम तुम्हें छोड़ते हैं और तुम से अम्न में रहना चाहते हैं (وَكَانَ هٰذَا قَبْلَ الْاَمْرِ بِالْجِهَادِ) **144 :** अपना अन्जामे कार। **1 :** सूरए दुख़ान मक्किय्या है इस में तीन रुकूअ़ और सत्तावन या उन्सठ आयतें और तीन सो छियालीस कलिमे और एक हज़ार चार सो इक्तीस ह़र्फ़ हैं। **2 :** या'नी क़ुरआने पाक की जो ह़लाल व ह़राम वग़ैरा अह़काम का बयान फ़रमाने वाला है। **3 :** इस रात से या शबे क़द्र मुराद है या शबे बराअत, इस शब में क़ुरआने पाक बि तमामिही लौह़े मह़फ़ूज़ से आस्माने दुन्या की त़रफ़ उतारा गया फिर वहां से ह़ज़रते जिब्रील तेईस साल के अ़र्से में थोड़ा थोड़ा ले कर नाज़िल हुए, इस शब को शबे मुबारका

www.dawateislami.net